महादेवी वर्मा की अन्तर्वेदना

अनीता देवी*

महादेवी छायावादी और रहस्यवादी कवयित्री हैं। महादेवी जी में काव्य–रचना के बीज बचपन में ही विद्यमान थें। महादेवी ने लिखा है, ''साधारणतः मनुष्य और संसार की क्रिया प्रतिक्रिया से उत्पन्न ज्ञान, अनुभूति सब संस्कारों का ऐसा रहस्यमय ताना बाना बुनते चलते हैं जो एक ओर ह्रदय और मस्तिष्क को जोड़े रहता है और दूसरी ओर जीवन के लिए एक विस्तार पीठिका प्रस्तुत कर देता है। जिसके पास यह संस्कार आकाश जितना व्यापक सामंजस्यपूर्ण और सुलझा हुआ होगा वह यथार्थ को उतनी ही सफल जीवन स्थिति दे सकता है। इस संस्कार की छिन्न–भिन्नता में हमें ऐसा यथार्थवादी मिलेगा जो जीवन को विरुप खण्डों में बाँटता चलता है और इसके नितान्त अभाव में वह विक्षिप्त सम्भव है जो सुख–दुःख का अनुभव करने पर भी उन्हें कोई सामान्य आधार–भित्ति नहीं दे पाता।'' घर के सात्विक एवं सुरुचिपूर्ण वातावरण और संस्कृति–काव्य और भारतीय दर्शनों के गहन अध्ययन ने उनकी काव्य–रुचि और प्रतिभा का परिमार्जन किया है। उनका स्वभाव और उनके संस्कार सम्पूर्ण रूप से भारतीय हैं। जीवन में संयम, साधना, शील और मर्यादा की वे प्रतीक हैं और इसी का प्रतिफलन उनके काव्य में भी दृष्टिगोचर होता है। उनका व्यक्तित्व बहुत कुछ अर्न्तमुखी होते हुए भी समाज और युग जीवन के प्रति उद्‌बुद्ध है। उनकी वास्तविक साधना तो एक कलाकार की साधना है। हिन्दी में आधुनिक गीतों के क्षेत्र में उनकी देन अद्वितीय है। भाव–तन्मयता, संयम और अभिव्यक्ति में एक नारी–सुलभ संकोच उनके गीतों को सर्वथा एक नयी भावभूमि पर प्रतिष्ठित कर देते हैं। एक बौद्धिक सक्रियता एवं अनुशासन उनमें हर जगह विद्यमान है। प्रकृति उस साधना का उपकरण है। उसके अन्तरालोक में महादेवी जी के अनुभूति एक आकुल अकथनीय अभिव्यक्ति की साधना है। उनके कथ्य में विस्तार नहीं है। संघटन और गहराई है। एक सी भावन्भूमि है– एक ही तन्मयता किन्तु उसका प्रत्येक क्षण साधक कलाकार की व्याकुलता से इतना आपुरित है कि कहीं पर विसंगति अथवा आवृत्ति नहीं लगती। आधुनिक हिन्दी साहित्य में अरूप की आराधिका महादेवी रहस्यवादी कवियों में अपना प्रमुख स्थान रखती हैं और इनमें आधुनिक रहस्यवाद के सभी तत्व उपलब्ध हैं। हिन्दी के वर्तमान कवियों में महादेवी ने प्रकृति के द्वारा अपनी भावों को परिभूत अभिव्यक्ति दी है और विराट की प्रेमानुभूति के लिए उनके व्यक्तित्व को विशालता तथा भव्यता दी है। अतः यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि महादेवी को उनकी वेदना, ने ही रहस्योन्मुखी बनाया है और वेदना की उनका रहस्यवाद है।

महादेवी जी के ह्रदय में देशभक्ति विद्यमान थी। देश के प्रति उनका अनुराग विद्यार्थी जीवन से ही था। उन्होंने अपने साहित्य में भी इसी तरह के साहस और आत्म–विश्वास को स्वर दिया है–

''पूछो न प्रात की बात आज
आँधी की राह चलो
रोम–रोम में बासन्ती तरूणाई झाँकी,
तुमने देखी नहीं मरण की वह छवि बाँकी।
तिमिर–पर्व में गलो अजर
नूतन में आज ढलो
आज आँधी रात के साथ चलो।''

उन्होंने अपने साहित्य में भी इसी तरह के साहस और आत्म–विश्वास को स्वर दिया है–

''पूछो न प्रात की बात आज
आँधी की राह चलो
रोम–रोम में बासन्ती तरूणाई झाँकी,
तुमने देखी नहीं मरण की वह छवि बाँकी।
तिमिर–पर्व में गलो अजर

* **शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी**

नूतन में आज ढलो
आज आँधी रात के साथ चलो।''

महादेवी जी अज्ञात ब्रह्म के प्रति जिज्ञासु होकर कहती है–

''न थे जब परिवर्तन दिन रात
नहीं आलोक तिमिर थे ज्ञात,
व्याप्त क्या सूने में सब ओर,
एक कम्पन थी एक हिलोर
न जिसमें स्पन्दन था न विकार,
न जिसका आदि न उपसंहार
सृष्टि के आदि–आदि में मौन,
अकेला सोता था वह कौन?''

कवयित्री मिलन की अपेक्षा विरह को ही अपने जीवन का सर्वस्व मानती हैं। महादेवी जी का मानना है कि ''मनुष्य की अन्तः शक्ति भी एक रहस्य से पूर्ण है और वाह्य जगत का विकास–क्रम भी, जिनमें हम इस रहस्य के प्रति जागरूक हो जाते हैं। इस रहस्य का आभास या अनुभूति मनुष्य के लिए स्वाभाविक रही है, अन्यथा हम सभी देशों के समृद्ध काव्य साहित्य में किसी न किसी रूप में इस रहस्य भाव का परिचय न पाते। महादेवी अपने रहस्य चिन्तन में पर्याप्त जागरुक दिखाई पड़ती हैं। अनुभूति–जन्य आत्माभिव्यक्ति और कल्पना प्रेरित सौन्दर्य भी उनके गीतों में प्रचुर मात्रा में मिलता है। छाँह और आर्द्रता के लिए जिस प्रकार बादल समस्त आकाश पर छा जाना चाहते है उसी प्रकार करूणा की छाया और आर्द्रता लिए हुए कवयित्री के भाव–गीत सम्पूर्ण जगत में छा जाना चाहते हैं । उसके भाव–गीत अबाध करुणा की स्फूर्ति से समान्वित सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के प्रति सर्वथा आश्वस्त होते हुए रहस्य से भरे पड़े हैं–

''लिए छाँह के साथ अश्रु का कुहक सलोना,
चले बसाने महाशून्य का कोना–कोना,
इनकी गति में आज मरण बेसुध बन्दी है,
कौन क्षितिज का पाश इन्हें जो बाँध सहज ले।
उन्नत मूक असीम मुखर सीमित तल देना,
बादल सा उठ इन्हें उतरता है जल–कण–सा
नभ विद्युत के वाण, सजा शूलों को रज ले।''

महादेवी जी के कवि जीवन में करुणा तथा वेदना का अनुपम सम्मिश्रण है। प्रिय के स्मरण के लिए यह शून्यता, नीरवता, एकान्तता उन्हें इतना अधिक प्रिय है कि वह सौरभ से भरे मस्त समीर से कहती हैं कि तुम मेरे एकान्तता को भंग करने मेरे पास मत आओ। अपनी वेदनापूर्ण आध्यात्मिक जीवन का परिचय देते हुए कवयित्री कहती हैं कि ...

''जन्म ही जिसका हुआ वियोग
तुम्हारा ही तो हूँ उच्छ्वास।
चुरा लाया जो विश्व–समीर
वह पीड़ा की पहली साँस।''

विरह साधना की निरन्तरता को बताते हुए कहती हैं कि मेरे प्राणों को कोई और वस्तु अच्छी नहीं लगती, केवल वही वेदना अच्छी लगती है जो निरन्तर मेरे मन को दीपक की भाँति जलाती रहती है–

''आलोक यहाँ लुटता है,
बुझ जाते हैं तारा गण
अविराम जला करता है
पर मेरा दीपक सा मन।''

महादेवी जी की कविता उनके एकांत क्षणों की वाणी है। परिणामस्वरूप विरह पीड़ा वेदना उनके जीवन में अपार करूणा का विस्तार कर देती है। जिसके फलस्वरूप वे अपनी पीड़ा के अतिरिक्त संसार की पीड़ा की ओर उन्मुख हो जाती है।

''कह दो माँ क्या अब देखू,
देखूँ खिलती कलियाँ या
प्यासे सूखे अधरों को,
तेरी चिर यौवन–सुषमा
या जर्जर जीवन देखूँ।

महादेवी के काव्य में परमसत्ता के प्रति आस्था पर गम्भीरता से विचार किया गया है –

छिपा हो जननी का अस्तित्व
रुदन में शिशु के अर्थ–विहीन
मिलेगा चित्रकार का ज्ञान
चित्र की जड़ता में लीन''

नारी स्वभाव से कोमल होती है। इन्होंने अपने काव्य में नारी सुलभ क्रियाओं का सुन्दर व मार्मिक चित्रण किया है। अपने गीतों के द्वारा वे नारी की हर, क्रिया–प्रतिक्रिया को मूर्त या साकार रूप देने का प्रयत्न की हैं इस कोमलता व मधुरता के कारण ही इनके काव्य में सरसता, सुकुमारता व सजीवता का समावेश हो गया है। उनकी यह कोमलता उनकी कविताओं में प्रकट हुई हैं–

''मैं पलकों में पाल रही हूँ यह सपना सुकुमार किसी का।''

या

''यह सपने या सुकुमार तुम्हारी स्मित से उजले।''

प्रियतम आकर कवयित्री की सुधि ले, इसी भावना से प्रेरित होकर वह अपने प्रिय से कहती है,' हे चि चंचल'

''तुम मलय–पवन बनकर एक बार इस पंथ से आओ–
एक बार आओ इस पथ से
मलय–अनिल बन हे चिर चंचल।''

वह उस पाहुन को अपने सम्पूर्ण जीवन की प्याली को पिला देना चाहतीं है जिस प्याली में वह करूणा की मधु और सुषमा की लाली डालकर अपनी पुतलियों से छानकर भरी हैं–

''कितनी करूणाओं का मधु कितनी सुषमा की लाली
पुतली में दान भरी है मैने जीवन की प्याली,
पी कर लेना शीतल मन!''

भारतीय हृदय ने विश्व के कण–कण को अपनी प्रेम भावना का दान दिया है। इसी जिज्ञासा की भावना ने मानव के हृदय में प्रभु के प्रति कौतूहल और विस्मय दोनों का संचार किया। प्रभु से अपरिचित रहने के कारण समस्त अद्भूत क्रियाओं के प्रति विस्मय का सा भाव उत्पन्न होता रहता है, परन्तु जब वह कुछ–कुछ प्रतीत होने लगता है तब कुतूहल की भावना जागृत होती है। महादेवी के लिए सृष्टि का कण–कण अपने स्रष्टा के सम्बन्ध में जिज्ञासा भाव प्रदर्शित करता है–

''कनक से दिन, मोती सी रात
सुनहली साँझ, गुलाबी प्रातः
मिटाता रंगता बारम्बार,
कौन जग का वह चित्रधार?''

महादेवी के काव्य का सनातन महत्व इसलिए भी है कि उसमें युग–संस्कृति का विवेचन है। जीवन मूल्यों की स्थापना है, कवियित्री के साहित्य में असीम करुणा व्याप्त है जो जीवन में अप्राप्त होकर अतृप्ति का कारण बन गया है। वह भीतर से निर्गुण धन की तरह पहले से ही संचित हैं। इस सत्य को मानव हृदय ने सृष्टि के आदिम काल से जाना है। कवियित्री अपनी विरह वेदना में जलकर अत्यन्त करूणा से भर उठी है जिसके फलस्वरूप उसके हृदय में संसार के सभी प्राणियों के लिए स्नेह की धार

है जैसे उसके प्राण प्रेम के बंधनों में बंधे हुए हैं और इस बन्धन से मुक्ति चाहते हैं। वैसे ही वह संसार के किसी प्राणी को बन्धन में बंधा नहीं देखना चाहती। वे कहती हैं –कि तुम्हें अपनी छाया को ही अपने लिए कारागार नहीं बनाना चाहिए क्योंकि तुम्हारी मंजिल अत्यन्त दूर है और पथ अत्यन्त कठिन है। इसीलिए हे संसार के साधनारत प्रार्णियों अपनी चिर सजग आंखों को आलस्य से मत भरो, जागो, तुम्हें तो दूर जाना है। मनुष्य की उपलब्ध मानवीय विभूतियां–त्याग, सेवा, दया, करुणा, उपकार आदि हैं जिसके माध्यम से उसकी मानवता अभिव्यक्ति पाती हैं। महादेवी का व्यक्तित्व अनेक असामंजस्यों और विसंगतियों से निर्मित है, अतः उनके वाह्य रुप से एक ओर मुक्त हँसी है तो अन्तरंग में दूसरी ओर एक व्यापक करुणा का विस्तार है। एक ओर प्रत्यक्ष और सामाजिक जीवन की वाह्य कर्मठता है तो दूसरी ओर आध्यात्मिक जीवन की आन्तरिक निःसंगता और सूनापन है। महादेवी का काव्य मानव की व्यक्तिगत और समष्टिगत जीवन परिधियों की मिलन भूमि का स्वर है।

संदर्भ–सूची

1. परिक्रमा, महादेवी वर्मा, साहित्य भवन प्रा0 लिमिटेड, जीरो रोड, इलाहाबाद, सं0 1998
2. आधुनिक कवि–1, महादेवी वर्मा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 12, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद,1993ई0
3. दीपशिखा, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण 1998
4. महादेवी, सम्पादक परमानन्द श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण, 1997
5. नीहार, महादेवी वर्मा, साहित्य भवन प्रा0 लिमिटेड जीरो रोड, इलाहाबाद, सं0 1998

●